द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रमः शिक्षक शिक्षा की नींव और भविष्य का मार्ग

कमलेश खुराना
षोधार्थी
शिक्षा संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय,
अलवर
malhotrakamlesh314@gmail.com

डॉ. सविता गुप्ता
शोध निर्देशक
शिक्षा संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

सारांश

यह अकादमिक आलेख द्विवर्षीय बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड.) कार्यक्रम के महत्व का विस्तृत विश्लेषण करता है, इसे शिक्षक शिक्षा की आधारशिला और राष्ट्र के शैक्षिक भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग के रूप में प्रस्तुत करता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों की केंद्रीय भूमिका को स्वीकार करते हुए, यह पेपर बी.एड. कार्यक्रम के ऐतिहासिक विकास, उसके उद्देश्यों, पाठ्यक्रम संरचना और शिक्षण–शास्त्र पर प्रकाश डालता है। यह कार्यक्रम शिक्षकों को आवश्यक व्यावसायिक कौशल, ज्ञान और नैतिक मूल्यों से लैस करने में कैसे मदद करता है, इस पर गहन चर्चा की गई है, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में।

मुख्य शब्दः *बी.एड. कार्यक्रम, शिक्षक शिक्षा, व्यावसायिक विकास, शिक्षा नीति, शिक्षण–शास्त्र, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), भविष्य के शिक्षक, समावेशी शिक्षा, शिक्षा मनोविज्ञान।*

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति और विकास का आधार स्तंभ है। एक सुदृढ़ और गतिशील शिक्षा प्रणाली के लिए योग्य, प्रशिक्षित और समर्पित शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि होती है। वे न केवल ज्ञान हस्तांतरित करते हैं, बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, उनमें समालोचनात्मक चिंतन और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं, और उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। इसी संदर्भ में, बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड.) कार्यक्रम भारत में शिक्षक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य घटक है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा 2014 में किए गए महत्वपूर्ण सुधार के बाद, बी.एड. कार्यक्रम की अवधि को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष कर दिया गया, जिसका उद्देश्य भावी शिक्षकों को अधिक गहन और व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करना था। यह द्विवर्षीय संरचना कार्यक्रम को केवल एक डिग्री से बढ़कर एक व्यावसायिक

तैयारी के रूप में स्थापित करती है, जो शिक्षकों को 21वीं सदी की कक्षाओं और शैक्षिक परिदृश्य की जटिलताओं से निपटने में सक्षम बनाती है। यह आलेख द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम को शिक्षक शिक्षा की नींव और भविष्य के शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक के रूप में विश्लेषित करेगा, इसके महत्व, लक्ष्यों, पाठ्यक्रम और चुनौतियों पर गहराई से विचार करेगा।

साहित्य समीक्षा

उम्मेद मलिक और पूनम सिद्धू (2022) ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण अभिक्षमता के बीच संबंध का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में महिला तथा पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता और शिक्षण दक्षता में एक सार्थक अंतर होता है, लेकिन शिक्षण दक्षता और शिक्षण अभिक्षमता एक–दूसरे से सहसंबंधित नहीं हैं ।

डॉ. उत्पल कालिता (2021) ने उच्च माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन उनके लिंग और शैक्षणिक स्तर के संदर्भ में किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि महिला और पुरुष शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। इसके अतिरिक्त, स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता के मध्यमानों में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

आभा शर्मा एवं कांता बुध (2021) ने माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता का शहरी व ग्रामीण महिला व पुरुषों के संदर्भ में अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि शहरी महिला व पुरुषों की अभिक्षमता समान होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में उनमें सार्थक अंतर होता है।

कुसुमलता (2020) ने शिक्षिकाओं के आकांक्षा स्तर और शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि शिक्षण अभिक्षमता के सभी चरणों व उनकी आकांक्षा में सार्थक संबंध होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के ऐतिहासिक विकास, उसके उद्देश्यों पर प्रकाश डालना।
- द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम की पाठ्यक्रम संरचना और शिक्षण–शास्त्र पर प्रकाश डालना।

बी.एड. कार्यक्रम का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और विकास

भारत में शिक्षक शिक्षा का इतिहास काफी पुराना है, जिसकी जड़ें प्राचीन गुरुकुल प्रणाली तक फैली हुई हैं। आधुनिक शिक्षक प्रशिक्षण की शुरुआत ब्रिटिश काल में हुई, जब मद्रास (1856) और लाहौर (1876) में प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थापित किए गए। स्वतंत्रता के बाद, विभिन्न शिक्षा आयोगों और समितियों ने शिक्षक शिक्षा के महत्व पर जोर दिया।

कोठारी आयोग (1964–66):

इस आयोग ने शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और इसे विश्वविद्यालयों से जोड़ने की सिफारिश की। इसने शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को राष्ट्र निर्माण का एक अनिवार्य हिस्सा माना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986:

इस नीति ने शिक्षक शिक्षा के पुनर्गठन और उन्नयन पर विशेष ध्यान दिया, जिससे जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना हुई और बी.एड. कार्यक्रमों की पहुंच बढ़ी।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद:

1995 में एक सांविधिक निकाय के रूप में स्थापित NCTE को भारत में अध्यापक शिक्षा के मानकों को बनाए रखने और समन्वित विकास के लिए जिम्मेदारी सौंपी गई।

द्विवर्षीय संरचना का आगमन:

2014 में NCTE ने बी.एड. कार्यक्रम को पाठ्यक्रम की गहराई, व्यावहारिक अनुभव और अनुसंधान अभिविन्यास को बढ़ाने के लिए एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष करने का निर्णय लिया। इस बदलाव का उद्देश्य शिक्षकों को केवल सूचना प्रदाता नहीं, बल्कि चिंतनशील अभ्यासी और आजीवन सीखने वाले बनाना था।

➢ द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के उद्देश्य

द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम को कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो भावी शिक्षकों को एक समग्र और पेशेवर तैयारी प्रदान करते हैं:

व्यावसायिक ज्ञान और कौशल का विकास:

छात्रों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं, शैक्षिक मनोविज्ञान, शैक्षिक समाजशास्त्र और शैक्षिक दर्शनशास्त्र की गहन समझ प्रदान करना।

शिक्षण–शास्त्र संबंधी दक्षताओं का निर्माण:

विभिन्न शिक्षण विधियों, तकनीकों और रणनीतियों में महारत हासिल कराना, ताकि वे विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

विषय–वस्तु की गहन समझ:

चुने हुए शिक्षण विषयों में छात्रों के ज्ञान को सुदृढ़ करना और उन्हें प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए तैयार करना।

समावेशी शिक्षा का परिचय:

विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों सहित सभी छात्रों को समायोजित करने और समावेशी कक्षा वातावरण बनाने के लिए कौशल विकसित करना।

मूल्यांकन और मापन कौशल:

छात्रों के सीखने की प्रगति का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों और उपकरणों का उपयोग करना सिखाना।

पाठ्यक्रम विकास और अनुकूलन:

राष्ट्रीय और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम को समझने, विकसित करने और अनुकूलित करने की क्षमता विकसित करना।

प्रौद्योगिकी का एकीकरण:

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शैक्षिक प्रौद्योगिकी और डिजिटल उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना सिखाना।

शोध अभिरुचि और चिंतनशील अभ्यास:

शिक्षकों को अपने शिक्षण अनुभवों पर चिंतन करने, शैक्षिक मुद्दों पर शोध करने और अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करना।

नैतिक मूल्य और व्यावसायिक आचरण:

शिक्षकों में उच्च नैतिक मूल्यों, ईमानदारी और व्यावसायिक नैतिकता का विकास करना।

➢ पाठ्यक्रम और शिक्षण–शास्त्र

द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम का पाठ्यक्रम सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव के बीच संतुलन स्थापित करता है।

➢ सैद्धांतिक घटक

शिक्षा के दार्शनिक और सामाजिक आधाररू विभिन्न शैक्षिक दर्शन (आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, व्यावहारिकता) और शिक्षा के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ को समझना।

शैक्षिक मनोविज्ञान:

सीखने के सिद्धांत, बाल विकास, व्यक्तिगत भिन्नताएँ, प्रेरणा और बुद्धि का अध्ययन।

पाठ्यक्रम अध्ययन:

पाठ्यक्रम विकास, डिजाइन, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के सिद्धांत।

शिक्षण–शास्त्र विषय:

दो विशेष विषयों में शिक्षण विधियों और सामग्री का गहन अध्ययन (जैसे हिंदी शिक्षण, गणित शिक्षण, विज्ञान शिक्षण, आदि)।

समावेशी शिक्षा:

विविध शिक्षार्थी, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, और उनके लिए प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ।

मूल्यांकन और मापन:

शैक्षिक मूल्यांकन के सिद्धांत, परीक्षण निर्माण और सांख्यिकीय विश्लेषण।

लिंग, स्कूल और समाज:

शिक्षा में लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय के मुद्दे।

➢ व्यावहारिक घटक

सूक्ष्म–शिक्षण:

विशिष्ट शिक्षण कौशलों (जैसे प्रस्तावना कौशल, प्रश्न पूछने का कौशल, दृष्टांत कौशल) पर केंद्रित अभ्यास।

शिक्षण अभ्यास/इंटर्नशिप:

वास्तविक विद्यालयी वातावरण में लंबे समय तक (आमतौर पर 16 सप्ताह) शिक्षण का अनुभव, जिसमें कक्षा प्रबंधन, पाठ योजना निर्माण और मूल्यांकन शामिल है।

कार्यशालाएँ और सेमिनार:

पाठ योजना, सामग्री विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग और शोध कौशल पर केंद्रित कार्यशालाएँ।

क्षेत्र कार्य और परियोजनाएँ विभिन्न शैक्षिक संस्थानों का दौरा, केस स्टडी, सर्वेक्षण और लघु अनुसंधान परियोजनाएँ।

सामुदायिक जुड़ाव कार्यक्रम:

सामाजिक जागरूकता, स्वच्छता अभियान या साक्षरता कार्यक्रमों में भागीदारी।

बी.एड. – शिक्षक शिक्षा की नींव के रूप में

द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम को शिक्षक शिक्षा की नींव निम्नलिखित कारणों से माना जाता है:

व्यावसायिक पहचान का निर्माण:

यह एक व्यक्ति को 'शिक्षक' के रूप में उसकी व्यावसायिक पहचान प्रदान करता है, जिससे वह अपने पेशे की जिम्मेदारियों और भूमिकाओं को समझता है।

शिक्षण कौशलों का विकास:

यह कार्यक्रम भावी शिक्षकों को कक्षा प्रबंधन, प्रभावी संचार, प्रश्न पूछने, पाठ योजना बनाने, शिक्षण सामग्री विकसित करने और छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने जैसे आवश्यक कौशल प्रदान करता है।

चिंतनशील अभ्यासी का निर्माण:

यह शिक्षकों को अपने स्वयं के शिक्षण अनुभवों पर विचार करने, अपनी शक्तियों और कमजोरियों को समझने और लगातार सुधार के लिए रणनीतियाँ विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

शैक्षिक सिद्धांतों की समझ:

यह शिक्षकों को विभिन्न शैक्षिक सिद्धांतों, दर्शनशास्त्रों और मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं से परिचित कराता है, जिससे वे अपने शिक्षण–अधिगम निर्णयों को सैद्धांतिक आधार पर ले सकते हैं।

समावेशी और न्यायसंगत शिक्षण:

बी.एड. कार्यक्रम शिक्षकों को विविध सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों की आवश्यकताओं को समझने और उन्हें पूरा करने के लिए तैयार करता है, जिससे एक समावेशी और न्यायसंगत शिक्षण वातावरण बनता है।

नैतिक और मानवीय मूल्यों का संचार:

यह शिक्षकों में व्यावसायिक नैतिकता, ईमानदारी, सहानुभूति और छात्रों के प्रति समर्पण जैसे महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों को विकसित करता है।

➢ बी.एड. – भविष्य के मार्ग के रूप में

बी.एड. कार्यक्रम केवल वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता, बल्कि भारत के शैक्षिक भविष्य के लिए मार्ग भी प्रशस्त करता है, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के आलोक में–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों की पूर्ति:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा , अनुभवात्मक शिक्षा, बहुविषयक दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जोर देती है। बी.एड. कार्यक्रम इन सभी क्षेत्रों में भावी शिक्षकों को तैयार करता है।

21वीं सदी के कौशलों का विकास:

यह कार्यक्रम शिक्षकों को छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, सहयोग, संचार, डिजिटल साक्षरता और समस्या–समाधान जैसे 21वीं सदी के कौशल विकसित करने के लिए तैयार करता है।

शिक्षक को एक आजीवन सीखने वाला बनाना:

बी.एड. कार्यक्रम शिक्षकों में निरंतर व्यावसायिक विकास और आजीवन सीखने की भावना पैदा करता है, जो उन्हें बदलते शैक्षिक परिदृश्य और नई शिक्षण–शास्त्रों के अनुकूल होने में मदद करता है।

अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा:

कार्यक्रम में शामिल अनुसंधान घटक शिक्षकों को कक्षा–आधारित शोध करने और शैक्षिक प्रथाओं में नवाचार लाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

राष्ट्र निर्माण में योगदान:

योग्य और प्रशिक्षित शिक्षक ही एक सशक्त नागरिक समाज का निर्माण कर सकते हैं, जो अंततः राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी एकीकरण:

बी.एड. कार्यक्रम शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों और शैक्षिक सॉफ्टवेयर का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण देता है, जो भविष्य के हाइब्रिड और ऑनलाइन सीखने के वातावरण के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक आधारशिला की भूमिका निभाता है। यह न केवल भावी शिक्षकों को ज्ञान और कौशल से लैस करता है, बल्कि उन्हें एक पेशे के रूप में शिक्षण की गहरी समझ, नैतिक जिम्मेदारी और सामाजिक भूमिका के लिए भी तैयार करता है। यह कार्यक्रम वर्तमान शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ–साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण को साकार करने और 21वीं सदी के लिए तैयार शिक्षकों का एक पूल बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

हालांकि, इसकी पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने के लिए गुणवत्ता सुनिश्चित करने, व्यावहारिक अनुभवों को मजबूत करने और संकाय विकास पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों का समाधान करके और बी.एड. कार्यक्रम को लगातार अद्यतन और अभिनव बनाकर, हम एक ऐसे शिक्षक बल का निर्माण कर सकते हैं जो भारत को ज्ञान–आधारित समाज और वैश्विक नेता बनाने के लिए प्रतिबद्ध हो। द्विवर्षीय बी.एड. कार्यक्रम केवल एक डिग्री नहीं हैय यह एक उज्ज्वल शैक्षिक भविष्य की नींव और उस रास्ते का निर्माण है जिस पर हमारा राष्ट्र आगे बढ़ेगा।

संदर्भ

- *भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय।*
- *राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) (2019) बी.एड. पाठ्यक्रम हेतु दिशानिर्देश और मानक, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद।*
- *कोठारी, डी. एस. (2020), शिक्षा और राष्ट्रीय विकास, शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, नई दिल्ली, भारत सरकार प्रकाशन विभाग।*
- *शर्मा, आर. ए. (2012), शिक्षण के सिद्धांत और पद्धतियाँ, दिल्ली, सूर्य प्रकाशन।*
- *पांडेय, रामशकल ((2015), भारतीय शिक्षा का इतिहास. प्रयागराज, कल्पना प्रकाशन।*

- *सिंह, ए. के. (2018), भारत में अध्यापक शिक्षा की चुनौतियाँ और संभावनाएँ. शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, 45–48*